e-book

चेतना का सागर : अनुरागसागर

प्रो. (श्रीमती) अगम कुलश्रेष्ठ

संस्कृत विभाग

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट,

(डीम्ड वि.वि.) दयालबाग़, आगरा

प्रथम संस्करण : 2016

<u>समर्पण</u>

तस्मै श्री गुरवे नमः

परम आचार्य, परमगुरु –
हुजूर डॉ. एम.बी.लाल साहब
(संस्थापक – डी.ई.आई.)
के
चरण–कमलों में;
शिक्षा–शताब्दी के उपलक्ष्य में,
श्रद्धासिक्त भक्ति सहित
सादर समर्पित!

चेतना

ऋषि–मुनिगण और विज्ञानी,
अटक–भटकते चहुँ खानी।
यह चेतना कहाँ से आती है,
किस रूप में चेतना आती है।।

चारवेद कहते नेति–नेति,
त्रिलोकी चेतना की गति एती।
ओम्–जय–जगदीश सनातनी,
अनुराग – सतलोक आरती।।

शास्त्र कह रहे स्फोट चेतना,
गॉडपार्टिकल विज्ञान कहे।
निज़ – महासुन्न – चिदाचेतना,
बिग़–बैंग के त्रय रूप रहे।।

साहब का दयालबाग़ आर्य,
बसाया जीव के निःश्रेयसार्थ।
चेतना केन्द्र का रूप यथार्थ,
करे है विश्व को महाकृतार्थ।।

शिक्षा संस्थापना शताब्दी–वर्ष,
करे अन्तश्चेतना को झंकृत।
विद्यास्रोत व शताब्दी भवन,
चेतना वृष्टि से हैं आलोकित।।

यहाँ नित्त चेतना झरती है,
चेतना झमाझम रहती है।
शिक्षा के शतवर्षोपलक्ष्य में,
वर दीजै – करैं प्रगति हम।।

दासानुदासी
अगम कुलश्रेष्ठ